iJRASET
International Journal For Research in
Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH
IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 11 Issue: VII Month of publication: July 2023

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2023.54731

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 11 Issue VII Jul 2023- Available at www.ijraset.com

भारतीय राजनीति में चन्द्रशेखर का योगदान

डॉ स्नेहवीर सिंह
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, दिगम्बर जैन कॉलेज, बडौत, बागपत

सारांश: भारतीय राजनीति में समाजवादी नेता चन्द्रशेखर का एक विशेष स्थान है। प्रधानमंत्री के रूप में आठ महीने से भी कम के कार्यकाल (10 नवंबर, 1990 से 20 जून, 1991) में ही उन्होंने अपनी नेतृत्व क्षमता और दूरदर्शिता की ऐसी छाप छोड़ी, जिसे आज भी याद किया जाता है। चंद्रशेखर को आज की राजनीति के इस दौर में इसलिए याद किया जाना चाहिए, क्योंकि उन्होंने हमेशा एक विचार से जुडकर और दलीय सीमाओं को तोडकर राजनीति की। समाजवादी संकल्पों के आवरण में रहते हुए उन्होंने मतभेदों को कभी दलीय और विचारधारात्मक संकीर्णता में सीमित नहीं होने दिया। सही और साफ़ बोलने में चन्द्रशेखर ने कभी भी दलीय सीमाओं को नही माना। जहाँ स्वदेशी जागरण मंच का समर्थन किया तो देश में हर फासीवादी कार्य का विरोध भी मुखरता के साथ किया। चन्द्रशेखर बहुत बार सार्वजनिक तौर पर विपक्षी नेताओं की भी तारीफ कर देते थे और मीटिंग के अंदर की बात को भी बता देते थे। क्योंकि उनका मानना था कि नेता की हर बात सार्वजनिक होनी चाहिए, क्योंकि वह जनता की नुमाइंदगी कर रहा है। इस बात को समझने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई द्वारा कही गई उन बातों को हमें याद करना होगा, जिसमें उन्होंने कहा कि, "चंद्रशेखर न पक्ष में हैं, न विपक्ष में हैं, बल्कि चंद्रशेखर निष्पक्ष हैं।" चन्द्रशेखर ने दिल्ली की राजनीति में वन मैंन आर्मी के रूप में अपनी पहचान स्थापित की। आज की पीढ़ी के बहुत कम लोग जानते होंगे कि चंद्रशेखर समाजवादी विचारधारा के भारत विख्यात मनीषी आचार्य नरेंद्रदेव के शिष्य थे और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अपने छात्र जीवन से ही समाजवादी आंदोलन से जुड़ गए थे। वह अपने गुरु आचार्य नरेंद्र देव के कहने पर कि, चन्द्रशेखर छोडो शोधग्रंथ लिखना, देश बनाने के लिए निकलिए, राजनीति में आये। चन्द्रशेखर अपनी पूरी जिन्दगी राजनीति में धारा के उलट चलते रहे। प्रधानमन्त्री बनते ही चन्द्रशेखर के तेवर से साफ़ हो गया कि वो कांग्रेस की कठपुतली नहीं हैं और राजीव गाँधी के इशारों पर नही चलेंगे।

मुख्य शब्द : चन्द्रशेखर, समाजवाद, स्वदेशी, कांग्रेस, इंदिरा गाँधी

I. शोधपत्र का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र में हम अपने ज़माने के बड़े समाजवादी नेता, युवा तुर्क के नाम से विख्यात पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर का भारतीय राजनीति में क्या योगदान रहा है,यह जानने का प्रयास करेंगे। अपने प्रधानमन्त्रित्व काल में चन्द्रशेखर की किन महत्वपूर्ण नीतियों को अंजाम दिया अथवा देने की कोशिश की, और इन नीतियों ने भारतीय राजनीति पर क्या प्रभाव डाला, यह समझने की कोशिश भी करेंगे।

भूमिका - दस नवंबर, 1990 से 21 जून, 1991 तक की बेहद अल्प अवधि में भारत के प्रधानमंत्री रहे स्वर्गीय चंद्रशेखर के नाम एक बड़ा ही अनूठा कीर्तिमान दर्ज है। वे भारत के समाजवादी आंदोलन से निकली हुई इकलौती ऐसी शख्सियत हैं, जिसे प्रधानमंत्री पद तक पहुंचने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इससे पहले वह 1977 से 1988 तक जनता पार्टी के अध्यक्ष रहे थे। चंद्रशेखर के संसदीय जीवन का आरंभ 1962 में उत्तर प्रदेश से राज्यसभा के लिए चुने जाने से हुआ। इसके बाद 1984 से 1989 तक की पांच सालों की अवधि छोड़कर वे अपनी आखिरी सांस तक लोकसभा के सदस्य रहे। 1967 में कांग्रेस संसदीय दल के महासचिव बनने के बाद चन्द्रशेखर ने तेज सामाजिक बदलाव लाने वाली नीतियों पर जोर दिया और उच्च वर्गों के बढ़ते एकाधिकार के खिलाफ आवाज उठाई तो सत्तासीनों से उनके गहरे मतभेद पूरी तरह बेपर्दा होकर सामने आये। उन्हें एक ऐसे 'युवा तुर्क' की संज्ञा दी जाने लगी, जिसने दृढ़ता, साहस एवं ईमानदारी के साथ निहित स्वार्थों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

इसी 'युवा तुर्क' के ही रूप में चंद्रशेखर ने 1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के विरोध के बावजूद कांग्रेस की राष्ट्रीय कार्यसमिति का चुनाव लड़ा और जीते। चन्द्रशेखर भारतीय राजनीति के एकमात्र ऐसे व्यक्तित्व रहे हैं, जिसने कभी किसी भी मंत्री पद के लिए भागदौड़ नहीं की, बल्कि सीधे प्रधानमन्त्री बने। उन्होंने हमेशा दलीय सीमाओं को तोड़कर लोगों की मदद की है। राजनीति और विवादों का चोली दामन का साथ है। जहाँ अधिकांश लोग इन विवादों से बचते नजर आते हैं, वहीं चन्द्रशेखर के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि अनेक विवादित लोगों से नाम जोड़े जाने के कारण उन्हें आलोचना झेलनी पड़ी, लेकिन इन सब लोगों से रात के अंधेरे में मिलना मंजूर नहीं किया बल्कि ऐसे लोगों से संबंधो को भी उन्होंने दिन के उजाले में स्वीकार किया। एक समय ऐसा भी आया जब चन्द्रशेखर के ऊपर पूरे देश में ट्रस्ट बनाकर संपत्तियों को हड़पने का आरोप लगा। उन्होंने आजीवन इसका कोई जवाब नहीं दिया। उनके मरने के बाद जब सच्चाई निकल कर सामने आई तो पता चला भारत विकास केंद्र और भोंडसी आश्रम जैसे केंद्रों में उनके परिवार का कोई भी व्यक्ति ट्रस्ट का सदस्य नहीं है, बल्कि इन सभी केंद्रों में ट्रस्ट के सदस्य स्थानीय लोग ही थे। उन्होंने अपने जीते जी अपने परिवार के किसी भी व्यक्ति को अपनी राजनीतिक विरासत में आगे नहीं पढ़ाया।

वे 1969 में दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक पत्रिका यंग इंडियन के संस्थापक संपादक थे। आपातकाल मार्च 1977 से जून 1975 के दौरान यंग इंडियन को बंद करा दिया गया था। फिरसे फरवरी 1989 से पुन: प्रकाशन शुरू हुआ। अपनी बेबाक शैली के लिए वह भारतीय राजनीति में हमेशा जाने गए। इंदिरा गाँधी के आवास पर शाम के समय देश दुनिया की राजनीति पर बातचीत के लिए कांग्रेस के कुछ बड़े नेता इकट्ठा होते थे, इंद्रकुमार गुजराल के आग्रह पर एक शाम चन्द्रशेखर भी उस मीटिंग में शामिल होने चले गए। इंदिरा जी ने जब पूछा कि चन्द्रशेखर क्या आप कांग्रेस को समाजवादी मानते हैं? जो जवाब चंद्रशेखर ने दिया, उसे सुनकर इंदिरा समेत वहां उपस्थित सभी लोग अवाक रह गये। उन्होंने कहा, "मै कांग्रेस को थोडा समाजवादी मानता हूँ, और थोडा बनाना चाहता हूँ, और अगर नही बना पाया तो कांग्रेस को तोड़ दूंगा।" यह घटना चंद्रशेखर की साफ़गोई और अक्खड़पन को समझने के लिए काफी है। लोकतान्त्रिक मूल्यों में उनकी आस्था और दूरदृष्टि का पता इसी बात से चलता है कि चंद्रशेखर कांग्रेस के इकलौते ऐसे नेता थे, जो कांग्रेस में महत्वपूर्ण हैसियत में होते हुए भी यह चाहते थे कि इंदिरा गांधी और जयप्रकाश नारायण की बातचीत होनी चाहिए। इन दोनों का टकराव देश के लिए अच्छा नहीं होगा, परिणाम भी वही हुआ। जेपी की गिरफ्तारी के बाद चन्द्रशेखर अकेले ऐसे कांग्रेसी नेता थे, जिन्हें विपक्षी नेताओं के साथ गिरफ्तार किया गया। जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद चंद्रशेखर ऐसे व्यक्ति थे जो मोरारजी को यह राजनीतिक शिष्टाचार समझाने में सफल रहे कि इंदिरा से उनका आवास नहीं छीनना चाहिए। 1977 के लोकसभा चुनाव में हुए जनता पार्टी के प्रयोग की विफलता के बाद इंदिरा गांधी फिर से जब सत्ता में लौटीं और उन्होंने स्वर्ण मंदिर पर सैनिक कार्रवाई की, तो पूरे देश की राजनीति में धारा के विपरीत चंद्रशेखर उन गिने-चुने नेताओं में से एक थे, जिन्होंने इसका पुरजोर विरोध किया था। बाद में इस कार्रवाई के कारण ही इंदिरा गांधी को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

वह वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण की नीति के हमेशा विरोधी थे और स्वदेशी के प्रबल समर्थक थे। वैश्वीकरण के विरोध और स्वदेशी के पक्ष में वह स्वदेशी जागरण मंच, जो कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक मंच था, उसके कार्यक्रमों में भी शामिल हुए। भूमंडलीकरण के रास्ते आयी गैरबराबरी और बेरोजगारी बढ़ाने वाली जिन आर्थिक नीतियों का दुष्चक्र हम आज भोग रहे हैं, उनके बारे में भी उन्होंने समय रहते चेता दिया था। उनका सुविचारित और स्पष्ट मत था और कि यह देश जब भी मजबूत होगा, अपने आंतरिक संसाधनों के दम पर ही होगा। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किया जाने वाला विदेशी निवेश तो इसके लिए मियादी बुखार में रोटी के टुकड़े के समान ही होगा। चन्द्रशेखर राजनीतिक छुआछूत के भी प्रबल विरोधी थे। वह कहते थे कि हममें से किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि वह बेवजह दूसरों की देशभक्ति पर शक करे अथवा किसी को देशभक्त या देशद्रोही सिद्ध करता घूमे।

चंद्रशेखर का प्रधानमंत्री का कार्यकाल छोटा रहा, लेकिन उस छोटे काल में भी उन्होंने तमाम सारे विवादास्पद विषयों से बचने के बजाय उन्हें हल करने की कोशिश की। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने उस कठिन दौर में भी, जब देश का सोना गिरवी रखने की नौबत सामने थी, भूमंडलीकरण की नीतियों के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया। वह काम तो उनके बाद 1991 में आयी पीवी नरसिम्हाराव के नेतृत्ववाली कांग्रेस की सरकार ने किया। तब भी चंद्रशेखर ने संसद के अंदर और बाहर उसका जबर्दस्त विरोध किया और उसके खिलाफ जनजागरण अभियान चलाया।

कार्यभार संभालने के कुछ ही दिनों के भीतर चंद्रशेखर पांचवे सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने मालदीव गए। वहाँ उन्होंने बिलकुल ठेठ हिंदी भाषा में क्षेत्रीय समस्याओं पर ओजस्वी भाषण दिया, जिसे वहाँ मौजूद सभी नेताओं ने काफ़ी पसंद किया। चंद्रशेखर के प्रधान सचिव रहे एसके मिश्रा ने बीबीसी को बताया कि, "नवाज शरीफ़ चंद्रशेखर के भाषण से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उस समय अपने कार्यालय में काम कर रहे रियाज़ खोखड़ से कहा कि काश तुम भी मेरे लिए इतनी अच्छी तक़रीर लिखते।" इस पर खोखड़ ने जवाब दिया कि भारत के प्रधानमन्त्री चंद्रशेखर के लिए वो भाषण किसी ने लिखा नहीं था, बल्कि उन्होंने बिना किसी तैयारी के एक्सटेंपोर दिया था।

एक ज़माने में चंद्रशेखर के सूचना सलाहकार रहे और इस समय जनता दल(यू) के सांसद हरिवंश बताते हैं कि, " अगर समय मिला होता तो चन्द्रशेखर भारत के सबसे प्रभावशाली प्रधानमंत्री सिद्ध होते। अपने चार महीने के कार्यकाल में ही अयोध्या विवाद, असम चुनाव, पंजाब समस्या, कश्मीर समस्या सबके समाधान की तरफ़ उन्होंने सधे हुए कदम बढ़ाए और बहुत हद तक उन चीज़ों को वह आगे ले जाने में सफल भी हुए।" हरिवंश ने कहा, "वो फ़ैसला लेना जानते थे। 1991 का आर्थिक संकट, जो कि कांग्रेस और वीपी सिंह सरकार की दें था। उस समय सिर्फ़ तीन हफ़्ते की विदेशी मुद्रा भारत के पास रह गई थी। उन्होंने देश को इस संकट से निकालने के लिए तुरंत फ़ैसला लिया." चंद्रशेखर ने अपने छोटे से कार्यकाल में अयोध्या विवाद को सुलझाने की पूरी कोशिश की। बाद में उन्होंने खुद लिखा कि, अगर उन्हें दो महीने का समय और मिल गया होता तो राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद का विवाद हमेशा के लिए सुलझा लिया गया होता। चंद्रशेखर के नज़दीकी रहे और उस समय प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री रहे कमल मोरारका बताते हैं कि, " मुझे लगता है कि बाबरी मस्जिद का फ़ैसला कराने को जो प्रयास उन्होंने किया, उसकी वजह से ही उनकी सरकार गई। उन्होंने शरद पवार को ये बात बताई। उन्होंने उसे राजीव गाँधी तक पहुंचा दिया। राजीव गाँधी इस बात को सुनकर खुश होने की बजाय परेशान हुए। उनकी समझ यह आ गया कि अगर चंद्रशेखर को काम करने दिया गया तो अल्पमत की उनकी यह सरकार बड़े दलों और नेताओं पर भारी पड सकती है। राजीव गाँधी ने शरद पंवार से कहा, दो दिन रूक जाइए और फिर उन्होंने चंद्रशेखर सरकार से समर्थन वापस ले लिया।

शरद पवार अपनी आत्मकथा, 'ऑन माई टर्म्स' में लिखते हैं, कि राजीव गाँधी ने मुझे चन्द्रशेखर के पास अपना फैसला वापिस लेने के लिए मनाने हेतू भेजा। इस्तीफा वापिस लेने के मेरे प्रस्ताव पर उन्होंने कहा कि क्या तुम्हे राजीव ने भेजा है? चंद्रशेखर गुस्से से कांपते हुए बोले, 'जाओ और उनसे कह दो, चंद्रशेखर एक दिन में तीन बार अपने विचार नहीं बदलता।"

अयोध्या विवाद हो या कश्मीर विवाद, पाकिस्तान से रिश्तों पर बातचीत हो या नक्सलियों से बातचीत उन्होंने हमेशा वार्ता को प्राथमिकता पर रखा। यह चंद्रशेखर ही थे जिन्होंने खालिस्तान समर्थक कई बड़े आतंकवादियों को अमृतसर में बुलाकर उनसे वार्ता की। बकौल यशवंत सिन्हा, “चंद्रशेखर भारतीय राजनीति के सबसे बड़े मानवतावादी नेता थे, उनकी नीतियों की सफलता की उम्मीद ही उनकी असफलता बन गई।” देश के कई बड़े नेताओं को डर हो गया कि केवल अपने छोटे से कार्यकाल में ही चन्द्रशेखर ने इन समस्याओं का हल कर दिया तो चन्द्रशेखर ही देश के हीरो साबित होंगे। इसी के चलते उन्हें अपनी सरकार गंवानी पड़ी। राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश जी के अनुसार, चन्द्रशेखर को लोकसभा चुनाव हारने के बाद राज्यसभा में लाने के कई लोगों द्वारा प्रयास शुरू हुए, जिनमें अटल बिहारी वाजपेई भी थे। चन्द्रशेखर ने यह सभी प्रस्ताव सभ्यता से नकार दिए और अपनी जगह अपने गुरु आचार्य नरेंद्र देव के बेटे को राज्यसभा में लाने के लिए सभी को राजी कर लिया।

एक सांसद के रूप में उनका जीवन अद्वितीय रहा। लोकसभा में चन्द्रशेखर जब बोलते थे तो पक्ष और विपक्ष सब उन्हें सुनते थे। उन्होंने सदन में बोलते हुए वह देश महत्वपूर्ण विषयों को छूते थे। उनके अनुसार, “कोई भी राष्ट्र अगर बस अतीत पर रोता रहेगा तो नया भविष्य कैसे बना पायेगा? उन्होंने कहा कि जज्बातों को उभार करके वोट पाई जा सकती हैं, सरकार बनाई जा सकती है, लेकिन देश की समस्याओं का समाधान नही किया जा सकता।“ वे कहते थे कि जो अल्पसंख्यक हैं, उनकी भाषा सख्त हो सकती है, लेकिन भावना नहीं, क्योंकि यदि उन्हें अपने देश में रह कर किसी तरह की परेशानी उठानी पड़ रही है, तो नि:संदेह उनकी भाषा सख्त होगी ही। स्वर्ण मन्दिर में फौज भेजने को जब सारी मीडिया और नेता सही साबित कर रहे थे तब एक आवाज इस घटना को बहुत ही दुखद मान रही थी, वो चन्द्रशेखर की आवाज थी। उनका मानना था कि धर्मनिरपेक्षता का सवाल शाश्वत सवाल है। धर्म के नाम पर आदमी आदमी का खून न बहाये, धर्म के नाम पर अल्पसंख्यकों के मन में दहशत न पैदा की जाये। उनका दृष्टिकोण इस मामले में बहुत ही स्पष्ट रहा। उदारीकरण पर उनका मानना था कि कोई भी विदेशी कंपनी भारत में पैसा लगा कर देश के लोगों का कल्याण नहीं करेगी। इन कंपनियों का मकसद भारत से लाभ कमा कर अपना हित साधना होगा और इससे देश की गरीबी कम नहीं होगी। उनका मानना था कि बाजार और करुणा का कोई मेल नही हो सकता।

वह आजीवन समाजवादी विचारों को मानते रहे। इसलिए राजनीति में परिवारवाद के चन्द्रशेखर हमेशा विरोधी रहे। अपने जीते जी उन्होंने अपने परिवार के किसी भी व्यक्ति को राजनीति में नही घुसाया। कहते हैं कि एक बार उनके बेटे ने पूछा, कि वे उसे क्या देकर जा रहे हैं? इस पर उन्होंने अपने एक सुरक्षाकर्मी को बुलाकर उससे उसके पिता का नाम पूछा। उसने बताया तो बेटे से पूछा कि तुम इनके पिता जी को जानते हो? बेटे ने कहा नहीं, तो चंद्रशेखर ने जवाब दिया, मैं तुमको यही देकर जा रहा हूं कि जब तुम किसी को अपने पिता का नाम बताओगे तो वह यह नहीं कहेगा, जो तुमने इनके पिता के बारे में कहा कि तुम उन्हें नहीं जानते।

चन्द्रशेखर पर जयप्रकाश नारायण के समाजवादी विचारों का पूरा प्रभाव था लेकिन चंद्रशेखर की कार्य पद्धति व काम करने का ढंग और विचार शैली आचार्य नरेंद्र देव के ज्यादा निकट थी। चंद्रशेखर ने आचार्य नरेंद्र देव और लोहिया के समाजवाद को मिलाकर उसमें भारतीय संस्कृति एवं भारत के परंपरागत राष्ट्रवाद को मिलाया। चंद्रशेखर स्वदेशी और स्वावलंबन के पक्षधर थे।

निष्कर्ष – निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि चन्द्रशेखर ने आजीवन एक समाजवादी का जीवन जिया। राजनीति में परिवारवाद के चन्द्रशेखर हमेशा विरोधी रहे। अपने छोटे से प्रधानमन्त्रित्व काल में भी उन्होंने देश की महत्वपूर्ण समस्याओं से बचने की बजाय उन्हें हल करने की पूरी कोशिश की। आज भी उनके बारे में कहा जाता है कि सत्ता में वे भले ही बहुत थोड़े समय के लिए रहे, लेकिन देश की राजनीति को उन्होंने कोई आधी शताब्दी तक प्रभावित किया। उन्होंने कहा था कि देश के दुर्भाग्य से उसके ज्यादातर लीडर, डीलरों में बदलते जा रहे हैं। कोई भी अलोकप्रियता का खतरा उठाकर जनता को सच्चा नेतृत्व नहीं देना चाहता।

चंद्रशेखर मानते थे कि उदारीकरण और वैश्वीकरण के लाभ कम और हानियां अधिक हैं। उनका कहना था कि अगर विदेशी कंपनियों को देश में आने की अनुमति दी जाएगी तो इससे उन्हें लाभ और देश की कंपनियों को नुकसान होगा समाजशास्त्री कमलेश मानते हैं, कि चंद्रशेखर ऐसा समाजवाद चाहते थे जिसमें अमीरी-गरीबी का अस्तित्व न हो, जिसमें सभी को बराबर हक मिले और असमानता न हो। वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण के बढ़ते प्रभाव और पूंजीवाद ने जिस तरीके से दुनिया गैर बराबरी और मानव के मानव के विरुद्ध शोषण को बढ़ावा दिया है ऐसी परिस्थितियों में चंद्रशेखर के विचार प्रासंगिक हो जाते हैं। वह मानते थे कि असमानता अनेक समस्याओं की जड़ है। प्रो आनंद कुमार के अनुसार, यह विडंबना ही है कि भारतीय लोकतंत्र में फैल रहे अवसरवाद के इस भयानक असंवेदनशील दौर में आज चंद्रशेखर की कोई विरासत उल्लेखनीय रूप से नहीं बची है। फिर भी सांप्रदायिकता, जनतंत्र विरोध, गरीबों की उपेक्षा और अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न के हर मौके पर चंद्रशेखर एक अच्छे नेता के रूप में याद किये जाएंगे। सही अर्थों में ही वह भारतीय राजनीति के अजातशत्रु कहे जा सकते हैं जो आजीवन अपने समाजवादी, लोकतान्त्रिक और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के लिए जाने जाते रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1] जीवन जैसा जिया – चन्द्रशेखर – राजकमल प्रकाशन – 2021
[2] रहबरी के सवाल(राजनीति के पैंतीस वर्ष की पड़ताल) – चन्द्रशेखर – 2018
[3] Chandra Shekhar: The Last Icon of Ideological Politics – Harivansh and Ravidutt Bajpai – Rupa Publications India – 2019
[4] Chandra Shekhar And The Six Months That Saved India – Roderick Matthews – Harpercollins publications – 2020
[5] मेरी जेल डायरी(खंड-एक) – चन्द्रशेखर – राजकमल प्रकाशन – 2022
[6] मेरी जेल डायरी(खंड-दो) – चन्द्रशेखर – राजकमल प्रकाशन – 2022
[7] World Trade Organisation: Challenges and Prospects - Chandra Shekhar - M.D. Publications Pvt. Limited, 2008
[8] राष्ट्रीयता और समाजवाद – आचार्य नरेन्द्रदेव - राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत – 2011
[9] देश, समाज और राजनीति का आईना – एम. जे. अकबर – प्रभात प्रकाशन ,दिल्ली – 2016
[10] भूमंडलीकरण के दौर में (चुने हुए निबन्ध) – प्रभाकर क्षोत्रिय – राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत – 2013

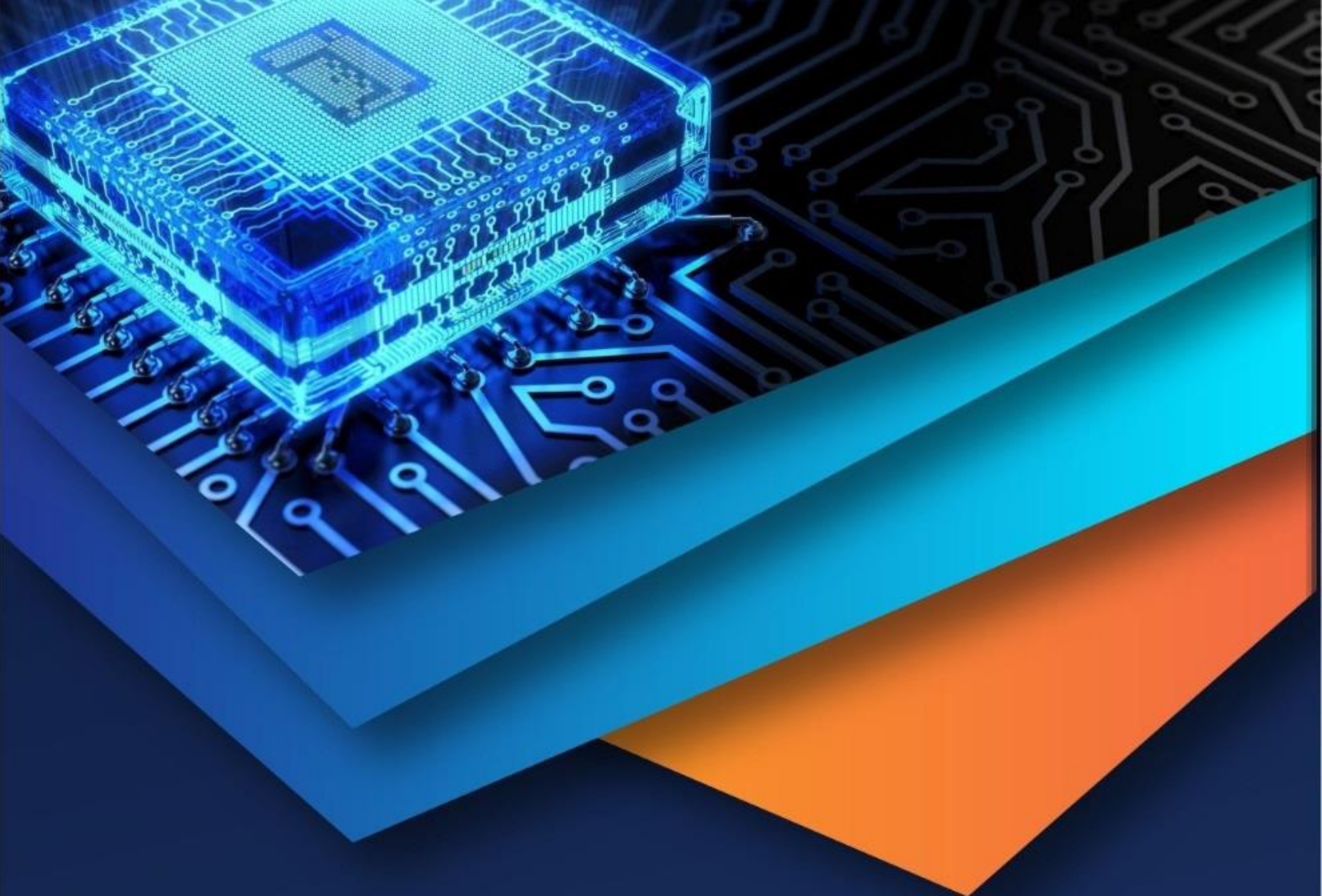

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)